स्तुति और आराधना

टिप्पणियाँ —

स्तुति और आराधनाः पाठ्यक्रम

कक्षा #१:

I. परिचय।
II. आराधना का जीवन।
III. परमेश्वर केंद्रित आराधना।
    क. मूर्तिपूजा।

कक्षा #२:

III. परमेश्वर केंद्रित आराधना (आगे):
    ख. मनुष्य केंद्रित आराधना।
    ग. परमेश्वर केंद्रित आराधना।
IV. आराधना की विषयवस्तुओं का बाइबल आधारित सर्वेक्षण।

कक्षा #३:

V. कलीसिया में आराधना और उत्सव।

कक्षा #४:

VI. आराधना और छुटकारे के गवाह।
VII. आराधना के विषय में व्यावहारिक प्रतिबिंब।

कक्षा #५:

VII. आराधना के विषय में व्यावहारिक प्रतिबिंब (आगे)।
    परीक्षा।

स्तुति और आराधना

टिप्पणियाँ —

स्तुति और आराधना:
परिक्षा संभावित २० बिंदु प्रशन

१) परमेश्वर की आराधना अक्सर मनुष्य केंद्रित होने की और क्यों प्रवत्त होती है (पृष्ठ ११६, ११७)

२) पुराने नियम और नए नियम की आराधना छवियों का हवाला देते हुए पुराने नियम से नए नियम में आराधना में परिर्वतन का वर्णन और व्याख्या करें। विभिन्न वचनों का प्रयोग करें (पृष्ठ १२०-१२३)।

३) आराधना के ६ स्वरूपों को चुनकर उनका वर्णन करें और विभिन्न वचनों के प्रयोग से उनकी वैधता की रक्षा करें। (पृष्ठ १२७-१३३)।

संभावित १० बिंदु प्रशन

१) यह वर्णन करने के लिए एक वचन का उपयोग करें कि कैसे एक सार्वभौमिक/रचनात्मक स्तर पर अस्तित्व परमेश्वर के प्रति आराधनात्मक प्रतिक्रिया से जुड़ा हुआ है (पृष्ठ १०८)।

२) एक वाक्य में, 'आराधना' की संक्षिप्त परिभाषा लिखिए (पृष्ठ ११०)।

३) मूर्तिपूजा के दो प्रकारों को बताएं और वर्णन करें (पृष्ठ ११३)।

४) सामूहिक आराधना के पांच तत्वों या अवयवों की सूची बनाएं। कोई संदर्भ आवश्यक नहीं है (पृष्ठ १२४)।

५) संगीत सेवकाई में काम करनेवालों के लिए चार आवश्यकताओं की सूची बनाएं। कोई संदर्भ आवश्यक नहीं है (पृष्ठ १३७)।

६) एक आराधना के अगुवे के तीन बुनियादी कार्यों की सूची बनाएं (पृष्ठ १४४, १४५)।

स्तुति और आराधना

टिप्पणियाँ –

I. पाठ्यक्रम परिचय।[१]

आराधना के लिए बुलाहट

इसके बाद मैं ने दृष्टि की और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिये हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है, और बड़े शब्द से पुकार कर कहती है, ''उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का, जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय-जय कार हो!''

सारे स्वर्गदूत उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं; फिर वे सिंहासन के सामने मुँह के बल गिर पड़े और परमेश्वर को दंडवत किया...

प्रेरित यूहन्ना
(प्रकाशितवाक्य ७:९-११)

क. आराधनाः सारी सृष्टि के अस्तित्व का कारण।

१. क्या आपने कभी अपने आप से पूछा हैः ''परमेश्वर ने संसार को क्यों बनाया? उसने मनुष्यों को क्यो बनाया? उसने मुझे क्यों बनाया? जीवन कहाँ ले जाता है?''

२. सुकरात, प्लेटों और अरस्तु जैसे महान दार्शनिकों सहित बहुत से मनुष्यों ने यही प्रशन पूछे हैं। हमारी उत्पत्ति, अस्तित्व और नियति के बारे में यह जिज्ञासा बहुत सामान्य है।

३. क्या आपको कभी आश्चर्य हुआ है कि क्यों यीशु एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आया, पाप रहित जीवन जिया, अपराधियों के बीच मारा गया, गाड़ा गया, फिर से जी उठा, और फिर से स्वर्ग लौट गया?

४. ये ऐसे मत्वपूर्ण प्रशन है जिनसे बाइबल स्वयं सबसे अधिक सरोकर रखती है। संयोग से, इन प्रशनों का उत्तर वचनों की एक अवधारणा में पाया जाता है - **आराधना।**

टिप्पणियाँ —

ख. पाठ्यक्रम के उद्देश्य।

१. आराधना, उनके तत्वों और रूपों के बारे में एक परमेश्वर-केंद्रित दृष्टिकोण पेश करना। यह परमेश्वर के प्रति मानव-केंद्रित और मूर्तिपूजक दृष्टिकोण की प्रवृत्ति के विपरीत हैं।

२. आराधना की जीवन शैली और उत्सव की सामूहिक अभिव्यक्ति के बीच भेद करना। दूसरे शब्दों में, स्तुति और उत्सव के बीच अंतर है जो एक साथ इक्ट्ठे होने पर और व्यावहारिक रूप से परमेश्वर के प्रति एक योग्य जीवन जीने पर होता है।

३. बाइबल की सीमाओं के भीतर आराधना के बीच महत्वपूर्ण और गंभीर भेदों को समझने के लिए, और इन बाइबल सीमाओं के बाहर क्या माना जा सकता है।

४. आराधना और संसार में गवाह के काम के बीच संबंध देखने के लिए।

५. स्तुति और आराधना के सामूहिक समारोह का आयोजन करते समय विचार करने के लिए व्यावहारिक दिशानिर्देश प्रदान करना।

II. आराधना का जीवनः रची गई चीजों की सामान्य स्थिति।

क. सभी रची गई चीजों के लिए आराधना सामान्य है।

१. सृष्टि के अस्तित्व का कारण परमेश्वर, हमारे सृष्टिकर्ता और मुक्तिदाता के प्रति एक आराधनापूर्ण प्रतिक्रिया से जुड़ा है।

२. इस तथ्य को देखने के लिए निम्नलिखित वचनों का परीक्षण करेंः

क. सार्वभौमिक/रचनात्मक स्तर (भजन १९:१-४)। यदि परमेश्वर के प्रति भक्ति की आवाज उठाने के लिए कोई मनुष्य न होता, तो यह पर्याप्त होगा कि स्वर्ग हमेशा के लिए उनकी योग्यता और महिमा की घोषणा करता है।

ख. वैश्विक स्तर (प्रका. ५:८, ९)। सारे विश्व इतिहास की पराकष्ठा सृष्टिकर्ता की योग्यता का एक बहु-जातीय, बहु-भाषीय, बहु-राष्ट्रीय उत्सव है।

ग. राष्ट्रीय/राज्य स्तर (भजन २:१०-१२)। राष्ट्रों के अगुवों और लोगों को चेतावनी दी जाती है क्योंकि वे उस उद्देश्य के विरूद्ध जा रहे हैं जिसके लिए उन्हें सेवा करने के लिए अधिकृत किया गया था।

टिप्पणियाँ —

घ. महत्वपूर्ण कलीसिया स्तर (प्रेरितों २:४-१२)। नए आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कलीसिया की पहली विशिष्टा गवाही और छुटकारे के लिए परमेश्वर की उल्लेखनीय बहु-भाषाई आराधना थी।

ङ. व्यक्तिगत आराधक (यूहन्ना ४:२३, २४)। यीशु ने इस बारे में सभी संदेह को दूर कर दिया कि परमेश्वर पृथ्वी पर क्या खोज रहे हैं - सच्चे आराधक। उनका हर एक मिशन सच्चे आराधकों को खोजने से जुड़ा था।

चर्चा का बिंदु

पिछली वरधारणाओं का उपयोग करके चर्चा करें कि जीवन के सभी स्तरों पर परमेश्वर की आराधना कैसे की जाती है (व्यक्तिगत, कलीसिया, राष्ट्र, वैश्विक, सार्वभौमिक)।

ख. आराधना के जीवन का वर्णन।

१. आराधना का विवरण तुरन्त स्पष्ट नहीं है।

२. क्या निम्नलिखित सभी को आराधना माना जाता है? भजन, गीत, उत्सव के जयकारे, सम्मान में घुटने टेकना, नृत्य, हाथ उठाना, और मौन?

३. क्या आराधना अपने कई रूपों से अधिक मौलिक है।

४. जैसा कि हम वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आराधना को मानते हैं, यह महत्वपूर्ण है कि पवित्रशास्त्र हमारा मार्गदर्शक हो। आराधना के रूप की कई सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को समझने का यही एकमात्र तरीका है।

ग. आराधना का बाइबल आधारित विवरण।

१. आराधना के लिए कम से कम छः यूनानी शब्द हैं (इस शब्द के इब्रानी और यूनानी अनुवाद के बीच कुछ अंतर है):

क. प्रोस्कुनेओ, जिसका अर्थ है, 'की ओर चूमना', का सबसे अधिक उपयोग किया गया है। इसे 'आराधना' करने के लिए अनुवादित किया जा सकता है।

ख. सेबेजोमाई, जिसका अर्थ है श्रद्धापूर्ण विस्मय या सम्मानजनक श्रद्धा का कार्य।

ग. यूसेबीओ, जिसका अर्थ है भक्ति, या धर्मपरायणता का जीवन अभ्यास।

टिप्पणियाँ –

घ. थेराप्यूओ, जिसका शाब्दिक अर्थ है हाथों से जोड़-तोड़ करके चंगा करना। प्रेरितों १७:२५ में इस प्रकार की आराधना - जिसे अक्सर मूर्तिपूजकों द्वारा किया जाता है, को जीवित परमेश्वर की आराधना के वैध रूप में अस्वीकार का दिया गया था।

ङ. लाट्रेओ, जिसका अर्थ है एक देवता को दी गई पुरोहित सेवा का कार्य।

च. लिटौर्जियो, जिसका अर्थ है आराधना के प्रतिनिधि कार्यालय की पूर्ति करना।

२. इस भाषाई नींव से हम देखते हैं कि आराधना बाहरी रूपों और मुद्राओं को प्रभावित करती है, लेकिन अधिक बारीकी से देखने पर, हम समझते हैं कि 'झुकना' और 'चुंबन' मूल्य के आंतरिक दृष्टिकोण की बाहरी प्रतिक्रिया है।

क. एक सेवक राजा के सामने झुकता है क्योंकि वह राजा की योग्य स्थिति को पहचानता है।

ख. एक व्यक्ति अपने प्रियजन को अनमोलता का संचार करने की गहरी आंतरिक इच्छा से एक चुम्बन देता है।

३. **संक्षेप में:** आराधना परमेश्वर की भक्ति करना है जिसके साथ श्रद्धा से प्रेरित विचार, शब्द और कर्म हैं।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ —

चर्चा का बिंदु

''आराधना के जीवन'' से संबंधित किसी भी प्रशन पर चर्चा करें और उसका उत्तर दें।

III. परमेश्वर-केंद्रित आराधनाः कोई अन्य बाइबल आधारित विकल्प नहीं।

झूठी आराधना के प्रति चेतावनीः

मैं तुम्हारे पर्वों से बैर रखता, और उन्हें निकम्मा जानता हूँ, और तुम्हारी महासभाओं से मैं प्रसन्न नहीं। चाहे तुम मेरे लिए होमबलि और अन्नबलि चढ़ाओ, तौभी मैं प्रसन्न न होऊँगा, और तुम्हारे पले हुए पशुओं के मेलबलियों की ओर न ताकूंगा। अपने गीतों का कोलाहल मुझ से दूर करो; तुम्हारी सारंगियों का सुर मैं न सुनूँगा। परन्तु न्याय को नदी के समान, और धर्म को महानद के समान बहने दो...

भविष्यद्वक्ता, आमोस
(आमोस ५:२१-२४)।

क. परमेश्वर-केंद्रित आराधना क्या है?

१. यह स्पष्ट है कि आराधना एक परमेश्वर-केंद्रित गतिविधि है।

क. हालाँकि, इस समझ का प्रमाण कई कलीसियाओं में हमेशा मौजूद नहीं होता।

ख. मानव जाति में आराम करने और आत्म-केंद्रिता की ओर बढ़ने की एक प्रमुख प्रवृत्ति होती है।

२. परमेश्वर-केंद्रित आराधना व्यापक, पारिवारिक और व्यक्तिगत स्तरों पर बाइबल आधारित प्रकाशन के प्रति मेहनती प्रतिक्रिया का विषय है।

क. जैसा कि उपरोक्त खण्ड इंगित करता है, आराधना मिलने के समय, या गीत गाने, या यहाँ तक कि परमेश्वर के बारे में सच्चाई के रूढ़िवादी निरूपणों से बढ़कर है।

ख. आराधना एक ऐसा जीवन है जो परमेश्वर की बहुमूल्यता से इतना अधिक मोहित हो जाता है कि एक विश्वासी आत्मा के सशक्तिकरण द्वारा पवित्रशास्त्र की सच्चाई का प्रत्युत्तर जीवन भर ''नतमस्तक'' होने के द्वारा देता है।

टिप्पणियाँ —

३. आराधना में मानवीय प्रतिक्रिया के तत्व के कारण, आइए आराधना के लिए उन आवश्यकताओं की जांच करें जो परमेश्वर का सम्मान करती है। हम आराधनात्मक प्रतिक्रिया के पैमाने पर मूर्तिपूजा, मानव-केंद्रित आराधना और परमेश्वर-केंद्रित आराधना में परस्पर तुलना प्रस्तुत करेंगे।

आराधना प्रतिक्रिया का पैमाना प्रस्तुत करने के
लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें

मूर्तिपूजा	मानव-केन्द्रित आराधना	परमेश्वर-केन्द्रित आराधना

ख. मूर्तिपूजाः जब आराधना अपना तरीका खो देती है।

१. आराधना सृष्टि में सबसे अधिक परमेश्वर की इच्छा वाली प्रतिक्रिया है। जब हम ईश्वरीय उपासना और आराधना की भावना और रूपों का अभ्यास करते हैं तो हम सबसे अधिक मानव होते हैं।

क. हालाँकि, इस वास्तविकता के कारण, शैतान सीधे तौर पर सच्ची आराधना के खिलाफ खड़ा हो गया। वह बाइबल आधारित आराधना को भ्रष्ट करने, बाधित करने और विकृत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

ख. संसार में आराधना के खिलाफ इस हमले के कारण, अब इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आराधक और सामान्य मनुष्य, कभी-कभी परमेश्वर-केंद्रित आराधना से अपना रास्ता भटक जाते हैं।

टिप्पणियाँ –

२. पवित्र शास्त्र एक प्रकार की आराधना के बारे में बिल्कुल स्पष्ट है, जो मूर्तिपूजा है। संसार और उसके समग्र धर्मों की प्रणाली में इस प्रकार की आराधना सबसे अधिक की जाती है। यद्यपि इसे इस नाम से नहीं पुकारा जा सकता, मानावजाति की उपासनापूर्ण प्रतिक्रिया बहुत कुछ मूर्तिपूजक है।

क. मूर्तिपूजा की परिभाषा मूर्तियों, छवियों या हाथों से बनाई गई किसी भी चीज़ या जो वचनों में प्रगट जीवित परमेश्वर नहीं है, की उपासना करना है। इसमें किसी भी चीज़ का अत्यधिक लगाव, वंदना या आराधना शामिल है।

ख. दो प्रकार की मूर्तिपूजा है।

१) हाथों के द्वारा बनाई गई किसी भी चीज़ या मानवजाति की कल्पना की उपासना करना।

क) छवियाँ, मूर्तिया, चित्र।

ख) सम्पत्ति, सामान, धन इत्यादि।

२) उन चीजों की उपासना करना जो मनुष्य ने नहीं बनाई।

क) आकाश के तारा गण (सूर्य, चन्द्रमा, तारे)।

ख) प्रकृति की रचनाएँ (आग, हवा, पृथ्वी, पत्थर, पानी)।

ग) पृथ्वी पर रची गई जीवित चीजें (मनुष्य, भूमि, समुद्री जंतु, या पेड-पौधे)।

घ) अनदेखे और आत्मिक जन, चुने हुए और दुष्ट (स्वर्गदूत, दुष्टात्माएँ, पूर्वज, यहाँ तक कि संत भी)।

३. मूर्तिपूजाः सख्त वर्जित उपासना।

क. पवित्रशास्त्र मानता है कि मनुष्य किसी चीज़ की उपासना करेगा, और मार्गदर्शन के बिना किसी के प्रति एक आराधनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करने की कोशिश करेगाः

१) जो कुछ भी मनुष्य से बड़ा है (उसके रूप, शक्ति या सुदंरता से)।

२) जो कुछ भी इस संसार में मनुष्य को उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिए मदद करने में सक्षम है।

टिप्पणियाँ –

ख. आइए बाइबल में कुछ मूर्तियों को देखें। उनकी अपील क्या थी?

१) बाइबल की आराधना से प्रस्थान के दो रूपः

क) झूठ देवताओं की उपासना (निर्गमन २०:३)।

ख) मूर्तियों के साथ, सच्चे परमेश्वर की आराधना (निर्गमन २०:४)।

२) बाइबल में मूर्तिपूजा के उदाहरणः

ग) मिस्रवासियों की मूर्तियाँ।

(१) सूर्य और नील नदी की उपासना। ये जीवन के स्रोत थे जिन पर वे निर्भर थे।

(२) उनकी कई छवियाँ आकाश, और पानी के भीतर या आसपास से ली गई थी (आग, सांप, मेंढक, मगरमच्छ, बैल, आदि)।

(३) यह देखने के लिए निर्गमन की दस विपत्तियों का अध्ययन करें कि परमेश्वर ने मिस्र के देवताओं को एक-एक करके हराया (निर्गमन ७.११; २३:२४)।

(४) बार-बार दोहराए गए वाक्य पर ध्यान दें: "ताकि वे जान लें कि कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है..." (निर्गमन ७:५; ८:१०, १९; ९:१३; १०:२; ११:७)।

घ) कनानियों की मूर्तियाँ।

(१) इस प्रकार की उपासना में अमानवीय प्रथाओं और बलिदान शामिल होते हैं, जीवन के बलिदान की आवश्यकता होती है, व्यक्तिगत गरिमा, बच्चों की बलि, धार्मिक वेश्यावृति और और सांप की उपासना शामिल है।

(२) इन देवताओं का उनके लिए कोई नैतिक चरित्र नहीं था। मानव और पशु संयोजन छवियों का हिस्सा थे। **ये उर्वरता और परमानंद रहस्य का प्रतिनिधित्व करते थे।**

(३) मोलेक, दागोन, बाल, और अशतोरेत, इसके उदाहरण हैं (लैव्यव्यवस्था १८:२१; न्यायियों १६:२३; न्यायियों २:११-२३)।[२]

टिप्पणियाँ –

ङ) मेसोपोटामिया की मूर्तियाँ।

(१) जो लोग पहले भूमि पर रहते थे, वे पहाड़ों, झरनों, पेड़ों और पत्थरों की आराधना करते थे।

(२) **ये दृश्यमान चीजों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें मनुष्य से बड़ा माना जाता है।**

(३) इसका एक उदाहरण ''पवित्र खंभे'' थे, जिन्हें गिदोन को ढा देने के लिए बुलाया गया था (न्यायियों ६:२५-३२)।

३) कड़ाई से निषिद्धः परमेश्वर के लिए एक घृणा।

च) पहली दो आज्ञाएँ आराधना को व्यवस्थित करने से संबंधित हैं - कोई छवि नहीं और कोई विकल्प नहीं (निर्गमन २०:३,४)। प्रथम चार आज्ञाएँ परमेश्वर और आराधना संबंधी हैं।

छ) विश्वासियों को मूर्तियों का नाश करने और उनके खिलाफ आक्रामक होने की आज्ञा दी गई है (न्यायियों ६:७.१०; २५-३२)।

ज) मूर्तिपूजा के अशुद्ध, यहाँ तक कि अमानवीय प्रभाव हैं (भजन ११५:८; रोमियों १:२१-३२)।

झ) मूर्तिपूजा, वास्तव में तुलनात्मक रूप से हास्यपूर्ण है (भजन ११५)।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ —

चर्चा का बिंदु

हमारी संस्कृति और हमारी कुछ कलीसियाओं में मूर्तिपूजा के कौन से रूप मौजूद हैं? कुछ ऐसे तरीके क्या हैं जिनसे हम मूर्तिपूजा का विरोध कर सकते हैं और इसे अपनी कलीसियाओं और घरों में प्रवेश करने से रोक सकते हैं?

ग. मनुष्य-केंद्रित आराधना।

१. बाइबल के पाठकों, या कलीसिया के इतिहास के पाठकों के लिए यह आश्यर्च की बात नहीं है, कि आराधना अक्सर परमेश्वर-केंद्रित होने से दूर हो जाती है और मनुष्य-केंद्रित हो जाती है।

२. इसके कुछ कारण हैः

क. मनुष्य का दिखावाः शारीरिक प्रवृत्ति।

१) मनुष्य को इस तहर से बनाया गया है कि वह आराधना, या प्रार्थना के माध्यम से, या बाइबल से प्रकाश के माध्यम से समय और अनंत काल को पार करने में सक्षम है।

२) हम सोचेंगे कि यह योग्यता हमें और अधिक महान बना देगी, लेकिन वास्तव में हम शरीर को प्राथमिकता देना पसंद करते हैं, जिसे देखा जा सकता है और जो हमें अपने बारे में बेहतर महसूस करता है (१यूहन्ना २:१५)। हम कामुकता की ओर प्रवृत्त होते हैं।

३) आराधना के विषय में, यह प्रवृत्ति मनुष्य के आराधना के अनुभव को कुछ ऐसा बनाने की क्षमता में स्पष्ट है जो मनुष्य के लिए फायदेमंद है, न कि एक भेंट जिसका आनंद परमेश्वर द्वारा लिया जाता है (देखें कैन और हाबिल ४:१-५)।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ –

ख. शरीरिक प्रवृत्तिः परमेश्वर से जोड़ना।

१) पवित्रशास्त्र में देखी जाने वाली एक प्रवृत्ति है कि जिसकी अनुमति परमेश्वर ने दी है उसे जोड़ना। यह प्रवृत्ति इस धारणा पर आधारित है, ''यीशु पर्याप्त नहीं हैं।''

२) कुलुस्सियों और गलातियों की कलीसिया को प्रेरित पौलुस द्वारा ठिक किया गया था क्योंकि वे उन विशेषताओं को जोड़ कर सच्चे धर्म से अलग हो गए थे जो आराधना को अधिक रोचक, या ''अधिक आत्मिक'' बना सकते थे जो परमेश्वर की इच्छा से अलग था (गलातियों ४:१०)।

अपना उदाहरण लिखें:

ग. शरीरिक प्रवृत्तिः परमेश्वर से घटाना।

१) एक और प्रवृत्ति जो इरादा किया गया था उससे घटना है।

क) व्यवस्था के नाम पर विश्वासी की आराधनापूर्ण अभिव्यक्ति पर अनुचित प्रतिबंध लगाए गए हैं।

ख) कुछ आराधना तत्वों और रूपों को बाइबल आधारित नियम से नहीं, बल्कि मनुष्यों की परंपरओं, सांप्रदयिक नियमों, या सांस्कृतिक प्राथमिकताओं के कारण उपयोग से प्रतिबंधित किया जाता है।

ग) यीशु के समय के शास्त्रियों और फरीसियों को परमेश्वर के दृष्टिकोण को सीमित करने की इस प्रवृत्ति के लिए ताड़ना दी गई (मत्ती २३:१३)।

टिप्पणियाँ —

२) कलीसिया के इतिहास में, कलीसिया ने एक बार आम लोगों को आराधना सभाओं में अपनी भाषा में पवित्रशास्त्र को पढ़ने या सुनने से रोका था। कुछ संप्रदाय अभी भी किसी भी संगीत वाद्ययंत्र की अनुमति नहीं देते हैं, अन्य कुछ निश्चित वाद्ययंत्रों और अभिव्यक्ति के रूपों को अस्वीकार करते हैं।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा का बिंदु

पिछली अवधारणाओं का उपयोग उन तरीकों पर चर्चा करने के लिए करें जिनमें मनुष्य-केंद्रित आराधना (मनुष्य को ऊँचा करना, परमेश्वर को जोड़ने, परमेश्वर से घटाने) की समस्या हमारी कलीसियाओं में मौजूद हैं। हम मनुष्य-केंद्रित आराधना की उपस्थिति का विरोध या सुधार कैसे कर सकते हैं।

घ. परमेश्वर-केंद्रित आराधना।

१. मूर्तिपूजा और आराधना की मानव-केंद्रित अभिव्यक्तियों को करीब से देखने के बाद, यह देखना बहुत आसान है कि परमेश्वर के प्रति सभी स्नेह, श्रद्धा और उपासना को केंद्रित करना क्यों महत्वपूर्ण है। क्योंकि हम उन्हीं के समान हो जाते हैं जिनकी हम आराधना करते हैं (भजन ११५:८)।

२. इस संबंध में, यह समझना महत्वपूर्ण है कि आराधना संगीतकारों या कवियों का विशेषाधिकार नहीं है, लेकिन हर एक विश्वासी का पहला काम है और यह धर्मशास्त्र की अधीनता में हैं भजनशास्त्र की नहीं।

स्तुति और आराधना

टिप्पणियाँ –

कक्षा की गतिविधि:

यीशु के वचनों के प्रकाश में परमेश्वर[3] के पद की विशेषताओं पर विचार करें: ''परन्तु वह समय आता है वरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढते हैं।'' (यूहन्ना ४:२३, २४)।

निम्न में से प्रत्येक के लिए, इन प्रश्नों पर चर्चा करें: हमें आराधना में इन विशेषताओं का प्रत्युत्तर कैसे देना चाहिए? कौन से रूप योग्य हैं?

१. परमेश्वर अपने स्वरूप में - एक अदृश्य, व्यक्तिगत, जीवित और सक्रिय आत्मा हैं (यूहन्ना ४:२४; १तीमुथियुस ६:१६)।

२. परमेश्वर आध्यात्मिक रूप से - स्व-अस्तित्व, अनंत और अपरिवर्तनीय है (निर्गमन ३:१४; याकूब १:१७)।

३. परमेश्वर बौद्धिक रूप से - विश्वासयोग्य, सर्वज्ञानी और बुद्धिमान है (१यूहन्ना १:९; ३:२०)।

४. परमेश्वर नैतिक रूप से - पवित्र, धर्मी, और प्रेमी हैं (हबक्कूक १:१३; भजन. ५:४: १यूहन्ना ४:८)।

५. परमेश्वर भावनात्मक रूप से - बुराई से घृणा करनेवाले, धीरजवंत, और करूणामय हैं (नहेम्याह १:३; निर्गमन ३४:६; विलापगीत ३:२२)।

६. परमेश्वर अपने अस्तित्व में – स्वतंत्र और सर्वशक्तिमान हैं (भजन ११५:३; मरकुस १४:३६)।

७. परमेश्वर संबंधपरक रूप से - संप्रभु एश्वर्य में सर्वोच्च, बचाने के लिए निकट रहनेवाले हैं (भजन ८९:११-१५; ११३:४-८; १४५:१८)।

टिप्पणियाँ –

IV. आराधना विषयवस्तुओं का बाइबल आधारित सर्वेक्षण।

क. परिचय।

१. यह खण्ड पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के प्रति मनुष्य की आराधनापूर्ण प्रतिक्रिया के संबंध में विभिन्न विषयवस्तुओं को शामिल करता है।

२. साथ ही यह पुराने नियम के विश्वासियों के मंदिर – केंद्रित आराधना जीवन से व्यक्तिगत विश्वासियों के जीवन, नए नियम में पवित्र आत्मा के नए मंदिर के परिवर्तन का भी वर्णन करता है।

ख. पुराने नियम के परिप्रेक्ष्य में आराधना।

१. कई मायनों में, इस्राएल में पुराने नियम की आराधना का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रकार, नए नियम में पूर्ण हुई वास्तविकताओं के प्रकार हैं।

२. निम्नलिखित विशेषताएँ पुराने नियम में आराधना का एक विवरण प्रदान करती हैं।

क. वेदीः 'परमेश्वर की उपस्थिति के साथ' स्थानीयकृत सभा स्थल।

१) इस्राएल में वेदी, स्वर्ग और पृथ्वी के बीच मिलने के स्थान का प्रतिनिधित्व करती है।

२) उत्पत्ति के आरम्भिक अध्यायों में, एक अनुभूति है जिसमें कैन और हाबिल ने परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश के योग्य और अयोग्य दृष्टिकोण की केंद्रियता को समझा है।

३) अब्राहम, विश्वासियों के पिता, हर बार जब वह चलते हैं तो अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को प्रदर्शित करते हैं - वह एक वेदी बनाते हैं।

४) ध्यान दें कि किस प्रकार उनके पुत्र और पोते उनके अच्छे उदाहरण का अनुसरण करते हैं (उत्पत्ति १२:७, ८; १३:४, १८; २२:९; २६:२५; ३३:२०; ३५:१,३-७)।

टिप्पणियाँ —

ख. बलिदानः बदले हुए जीवन का पाठ।

१) सदियों से, इस्राएल लहू, मांस और अनाज के दैनिक बलिदान प्रस्तुत करता है। यह जीवन और परमेश्वर की फलवंत आशीष का प्रतिनिधित्व करता है।

२) वार्षिक रूप से, औपचरिक सभाओं ने सामूहिक रूप से दैनिक पाप के लिए प्रायश्चित किया, जिसने यह सबक दिया कि जीवन लहू में है, और केवल प्रतिस्थापन मृत्यु द्वारा ही पाप का प्रायश्चित किया जा सकता है (प्रायश्चित के वार्षिक समारोह के लिए लैव्यव्यवस्था १६ सम्पूर्ण अध्याय पढ़ें; इब्रानियों १०:१-३)।

ग. औपचारिक विनियमः पवित्रता और व्यवस्था का पाठ।

१) लैव्यव्यवस्था १० मनुष्य की परमेश्वर तक पंहुच के बारे में परमेश्वर के दृष्टिकोण के विषय में एक सतत पाठ सिखता है। जो लोग उनके पास जाते हैं उनके द्वारा वह पवित्र माने जाने चाहिए। वह परम पूजनीय हैं।

२) पुराने नियम में औपचारिक नियम दया के प्रकाशन हैं। मनुष्य पवित्रता के मानकों को शिथिल कर देता है या उन्हें परमेश्वर की मंशा से अधिक सीमित कर देता है - दोनों ही त्रुटियाँ हैं - अपने स्वयं के जोखिम के लिए (लैव्यव्यवस्था १०:१-११ की तुलना प्रेरितों ५:१-११ से करें)।

घ. मिलाप का तम्बूः पहुँच और साक्षी का पाठ।

१) आराधना के यात्रा तम्बू की उपस्थिति परमेश्वर तक पहुँच की तस्वीर है। यह मनुष्य के लिए एक करूणामयी पेशकश है। यह कहता है, ''परमेश्वर को जानें।'' यह संदेश इस्राएल के लिए था और आस-पास के राष्ट्रों के लिए था।

२) इस्राएल के भटकने के मार्ग का अनुसरण करना दिलचस्प है। उन्होंने मिस्र और कनान के बीच अधिकांश देशों का दौरा किया। क्या परमेश्वर स्वयं को राष्ट्रों के लिए अर्पित कर रहे थे? (भजन १०५ के निहितार्थो पर चर्चा करेंः विशेषकर १, २ और १३)।

टिप्पणियाँ –

ड. इस्राएल का संगीतः हार्दिक उत्सव का पाठ।

१) भजन आराधकों के शुद्ध हृदयों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे प्रेम, स्नेह, प्रशंसा, और आनंद के साथ गाते प्रतीत होते हैं।

२) वे भय, असफलता, क्षमा और वेदना को भी प्रगट करते हैं।

३) उनमें, और इस्राएल के अन्य संगीत में, हम आराधना में अपने आप को परमेश्वर को देना सीखते हैं। भजनों में आराधना के कई रूप स्वीकृत हैं।

च. याजकीय क्रमः मसीह के तत्व की छाया।

१) पुराने नियम में याजक वर्ग की उपस्थिति नए नियम में महान याजक, मसीह की छाया है।

२) यह परमेश्वर की वेदी पर भी सेवकों के एक वर्ग, कलीसिया का पूर्वाभास देता है (इब्रानियों ९:११; प्रकाशितवाक्य ५:१०)।

चर्चा का बिंदु

पुराने नियम की आराधना की ये विशेषताएँ मसीह में हमारे नए नियम के प्रावधान की समझ से कैसे संबंधित हैं, इस बारे में आगे चर्चा को बढ़ावा दें।

टिप्पणियाँ –

ग. नए नियम के परिप्रेक्ष्य में आराधना।

१. नया नियम उन प्रतिज्ञाओं को वास्तविकता में पूर्ण करता है जो पुराने नियम में केवल एक छाया मात्र थीं।

२. पुराने नियम की छवियाँ नए नियम की वास्तविकताओं की समझ की पेशकश करती हैं।

क. परमेश्वर की नई वेदीः मनुष्य का छुटकारा पाया हुआ हृदय (कुलुस्सियों १:२७; १ कुरिन्थियों ३:१६)।

ख. नया बदला हुआ जीवनः आराधना की हमारी उचित सेवा (रोमियों १२:१, २)।

ग. नयी औपचारिक व्यवस्थाः आत्मा और सच्चाई द्वारा विनियमित (यूहन्ना ४:२०-२४)

घ. मिलने का नया स्थानः मनुष्य, राष्ट्रों में मंदिर (प्रेरितों १६:२५-३०; १ पतरस २:५)।

ङ. नए इस्राएल का संगीतः आत्मा की उपस्थिति की अभिव्यक्ति (इफिसियों ५:१८, १९)।

च. नया याजक पदः मसीह, महायाजक; सारे विश्वासी, याजक (इब्रानियों ३:१-६, ९:१; १ पतरस २:५,८, ९)।

चर्चा का बिंदु

चर्चा करें कि यदि हम इन नए नियम के दृष्टिकोणों को अपने आराधना जीवन का केंद्र बिंदु बनाते हैं तो हमारी आराधना कैस अधिक परमेश्वर-केंद्रित रहेगी। आप इन दृष्टिकोणों को अपनी कलीसिया की आराधना में कैसे शामिल कर सकते हैं?

टिप्पणियाँ —

V. कलीसिया में आराधना और उत्सवः तत्व, रूप और पदार्थ।

क. आराधना और उत्सव के तत्व।

१. सामूहिक आराधना अनुभव के तत्व बाइबल से प्राप्त हुए हैं। ये तत्व नए नियम में उदाहरणों से प्राप्त हुए हैं।

२. ये विश्वासियों की सामान्य संगति में अपेक्षित घटनाओं के रूप में प्रकट होते हैं।

३. इन तत्वों की आत्मा कलवरी पर, पाप, मृत्यु और कब्र पर मसीह की हाल की विजय के उत्सव के संदर्भ में है।

क. परमेश्वर का वचन समझाया और प्रकाशित किया गया (प्रेरितों २:४२; १ कुरिन्थियों १४:२६)।

ख. प्रभु भोज या रोटी का तोड़ना (प्रेरितों २:४२; १ कुरिन्थियों ११:२३-३४)।

ग. विश्वासियों का बपतिस्मा (मत्ती २८:१९; प्रेरितों २:४१)।

घ. संगति के लिए इकट्ठा होना (प्रेरितों २:४२; इब्रानियों १०:२४)।

ङ. स्तुति और संगीतमय उत्सव (लूका २४:५३; १कुरिन्थियों १४:१५; इफिसियों ५:१९)।

च. भेंट देना (प्रेरितों ४:३४, ३५; १कुरिन्थियों १६:१, २)।

चर्चा का बिंदु

क्या पिछली अवधारणाएँ आपकी कलीसिया की सामान्य घटनाएँ हैं? हमारे लिए प्रदान किए गए शास्त्र आधरित ढ़ाँचे का पालन करने की आवश्यकता पर चर्चा करें। इन शास्त्र आधारित विवरणों से दूर जाने के संभावित खतरों पर चर्चा करें।

टिप्पणियाँ —

ख. अन्य गुणवत्ता विचाररू वास्तविक सभा।

१. बाइबल में ऐसे विवरण हैं जो आवश्यक रूप से आराधना सभा का हिस्सा बनने के लिए अनिवार्य नहीं हैं, लेकिन वे नए नियम की आराधना की विशेषता प्रतीत होते हैं।

२. सभाओं के इस विवरण पर विचार करें।

क. आत्मिक/भौतिक रूप से एकीकृत (प्रेरितों २:४४, ४:३२)।

ख. मंदिर में; घर-घर (कलीसिया स्नानीयकृत थी)।

ग. आनंद की अनुभूति; भय, वस्मय, कायलता (प्रेरितों २:४३, ४६, ४७; १कुरिन्थियों १४:२४, २५)।

घ. अलौकिक घटनाएँ हुई (प्रेरितों २:४३; याकूब ५:१३-१६)।

ङ. सब कुछ साझे में था; एक साथ भोजन, सम्पत्ति बेचना (प्रेरितों २:४४-४६)।

च. सेवा की सहायक संरचनाएँ (प्रेरितों ६:१-७)।

छ. दैनिक, या कम से कम साप्ताहिक रूप से मिलना (प्रेरितों २:२६; १कुरिन्थियों १६:१, २; इब्रानियों ३:१३)।

चर्चा का बिंदु

क्या हमारी सभाएँ नए नियम के विवरणों को दर्शाती हैं? यदि नही तो क्या हमें चिंतित होना चाहिए? इस मुद्दे पर चर्चा करें।

टिप्पणियाँ —

ग. आराधना और उत्सव के रूप और तत्व।

१. आइए अब हम अपना ध्यान आराधना के सबसे बाहरी पहलुओं, इसके स्वरूप की ओर मोड़ें। इन विशेषताओं को उनके अधिक महत्वपूर्ण आंतरिक कारकों से जोड़ना महत्वपूर्ण है।

२. ध्यान में रखने के लिए यहाँ कई कारक हैं क्योंकि इस अध्ययन में ध्यान आराधना और उत्सव के धर्मशास्त्र के कामकाज की ओर जाता है।

क. रूप वास्तविकता की छाया हैंः मसीह तत्व हैं (कुलुस्सियों २; इब्रानियों १०:१-३)। यह हमारी आराधना पद्धतियों में भी सत्य है। हमारी आराधना की अभिव्यक्तियों में उनके बारे में एक अनंत प्रकृति होनी चाहिए (प्रकाशितवाक्य ५:८-१०)।

ख. संस्कृतियों के बीच रूप बदल सकते हैं, लेकिन तत्व बना रहता है; जो कि मसीह हैं।

१) यीशु ने उन सामरी महिला को ठीक किया जिन्होंने आराधना के ''उचित'' रूपों और स्थानों के बारे में बहस करने की कोशिश की थी।

२) उन्होंने सांस्कृति प्राथमिकताओं पर ज़ोर न देकर और अनंत वास्तविकताओं पर ज़ोर देने के द्वारा उन महिला की सोच को चुनौती दी।

३) उन्होंने उन्हें बाताया कि स्वर्ग में पिता ऐसे आराधकों को ढूंढ रहे थे जो आत्मा की उपस्थिति (वह जो यीशु की ओर संकेत करते हैं) और सत्य (मसीह का स्वभाव, वचन और प्रकाशन) को जानते थे (देखें यूहन्ना ४:२०-२४)।

ग. रूप (व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों) बाइबल की सच्चाई द्वारा नियंत्रित होते हैं, मानव आविष्कार या पथभ्रष्ट जलन से नहीं (लैव्यव्यवस्था १०:१-३; उज्जिया की जलन के बारे में पढ़ें, लेकिन इस संबंध में घातक त्रुटि)।

टिप्पणियाँ —

घ. रूप उद्देश्य और कार्य का अनुसरण करता है।

१) इस सरल नियम पर विचार करना महत्वपूर्ण है। प्रशन पूछना ''क्यों'' बाइबल के विचारकों के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिबिंबों में से एक हो सकता है

२) चूंकि आराधना शैली निश्चित परंपरा, संप्रदाय या सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का विषय है, ईमानदार विश्वासी इस कारण पर विचार करने के लिए स्वतंत्र है कि क्यों एक निश्चित शैली को पसंद या अभ्यास किया जाता है।

३) यह सामरी स्त्री के लिए यीशु के शब्दों का व्यावहारिक निहितार्थ है (यूहन्ना ४:२४)।

घ. आराधना और स्तुति के रूप।

१. **खड़े होना** (देखें १ राजाओं ८:२२; १ इतिहास २३:३०; २ इतिहास ७:६; भजन १३४:१; १३५:२; रोमियों ५:२)। यह सम्मान से बाहर है कि हम खड़े होकर यह दिखावा करते हैं कि हम प्रभु के प्रति चौकस हैं।

२. **घुटने टेकना** (देखें भजन ९५:६; प्रेरितों २०:३६; २१:५; फिलिप्पियों २:१०)। हम आदर और अधिनता की एक क्रिया के रूप में घुटने टेकते हैं।

३. **नीचे झुकना** (देखें यशायाह ४५:२३; भजन ९५:६; २ इतिहास २०:१८; रोमियों १४:११)।

आराधना के लिए इन तीन इब्रानी शब्दों का अर्थ झुकना हैः

क. शकाह - १७१ बार उपयोग हुआ।

ख. कदाद - १५ बार उपयोग हुआ।

ग. कारा - ३० बार उपयोग किया।

टिप्पणियाँ —

४. **नाचना** (देखें निर्गमन १५:२०; भजन ३०:११; १४९:३; १५०:४; न्यायियों ११:३४; १शमूएल १८:६-७; २१:११; २९:५; २ शमूएल ६:१४-१६; १ इतिहास १५:२९; यिर्मयाह ३१:४,१२,१३; लूका १५:२५; मत्ती ११:१७; लूका ७:३२)।

क. यूनानी और इब्रानी शब्द जिनका अनुवाद ''आनंद'' के रूप में हुआ किया गया है का अर्थ है, घूमना, उछलना, छलांग, और आनंद से कूदना।

ख. नाचना आमतौर पर आराधना और आनंद से जुड़ा होता है, लेकिन आत्मिक युद्ध के लिए भी इसका महत्व होता है जब शत्रु ''पैर के नीचे'' होता है (विजय का एक चिन्ह्न देखें भजन ४७:१-३)।

ग. नाचने में ''ऊपर और चीचे कूदने'' से अधिक और भी बहुत कुछ है जैसा कि उत्तरी अमेरिका की करिश्माई कलीसियाओं में लोकप्रिय रहा है। यह मान्य है, लेकिन और भी बहुत कुछ है।

घ. नाचने और आनंद के लिए इब्रानी शब्दों का संक्षिप्त शब्द अध्ययन निम्नलिखित है।

१) गुल; गिलः अर्थात् चारो ओर घूमना; आनंद; भय; मगन होना; हर्षित; एक घेरे में जाना। (देखें, भजन २:११; ९:१४; ५३:६; ८९:१६; ११८:२४; यशायाह ९:३; ६१:१०)।

२) चुल; चिलः अर्थात् मुड़ना या घुमना (एक चक्र या सर्पिल तरीके से); नाचने के लिए; मुड़ने के लिए; दर्द में ऐंठन के लिए; प्रसव पीड़ा के लिए (बच्चे का जन्म) (देखें व्यवस्थाविवरण २:२५; भजन २९:९; ५५:४; यशायाह १३:८; यिर्मयाह ४:१९; यहेजकेल ३०:१६)।

३) करारः अर्थात् नाचने के लिए; एक चक्र में घुमने के लिए (देखें २ शमूएल ६:१४)।

४) रिकदः अर्थात् पैर पटकना, पीछे घूमना (पागलों के समान या आनंद से, नाचना, उछलना, छलांग लगाना, कूदना)। (देखें १इतिहास १५:२९; भजन २९:६; ११४:४,६; यशायाह १३:२१)।

५) दालगः अर्थात् घूमना या छलांग लगाना (देखें २ शमूएल २२:३०; भजन १८:२९; यशायाह ३५:६)।

६) पजाज का अर्थ है छलांग लगाना; बाध्य करने के लिए; हल्का या फुर्तीला होना (देखें उत्पत्ति ४९:२४; २ शमूएल ६:१६)।

७) चगागः अर्थात् एक घेरे में घूमना; विशेष रूप से एक पवित्र जुलूस में प्रदर्शन करने के लिए; एक त्यौहार मनाने के लिए, एक पवित्र भोज रखना। (देखें १ शमूएल ३०:१६; निर्गमन ५:१; लैव्यव्यवस्था २३:४१; भजन ४२:४)।

टिप्पणियाँ —

ङ. नाचने और आनंद के लिए यूनानी शब्दों का संक्षिप्त शब्द अध्ययन निम्नलिखित है।

१) अगलियाओंः अर्थात् आनंद से कूदना, अत्यन्त आनंदित होना, बहुतायत से आनंदन मनाना (देखें लूका १०:२१; मत्ती ५:१२; यूहन्ना ५:३५; प्रेरितों २:२६; १ पतरस ४:१३; इब्रानियों १:९)।

२) हल्लोमई; एक्साल्लोमईः अर्थात् कूदना, छलांग लगाना, ऊपर उठना (देखें प्रेरितों ३:८)।

३) स्कर्टोः अर्थात् कूदना, आनंद से छलांग लगाना (देखें लूका ६:२३; १:४१,४४)।

४) कोरोसः अर्थात् एक छल्ला या गोल नृत्य समूह (देखें लूका १५:२५)।

५) ओरच्योमाईः अर्थात् नाचना। (देखें मत्ती ११:१७; १४:६; मरकुस ६:२२; लूका ७:३२। यह १ इतिहस १५:२९; २ शमूएल ६:२१ में दाऊद का वर्णन करने के लिए पुराने नियम के ''सेप्टुआजेंट'' अनुवाद में प्रयुक्त यूनानी शब्द है।)

च. आराधना में नाचना।

१) पर्व नृत्य।

क) संगति या उत्सत्व का समय।

ख) ''आबेलमहोला'' (१ राजाओं १९:१६) को नृत्य का मैदान कहा जाता है। यह त्यौहारों और पर्वों के दिनों के लिए अलग किया गया स्थान था।

(१) एलीशा वहाँ पैदा हुए थे।

(२) हम कह सकते हैं कि ''दुगने भाग'' के सेवक आराधना से पैदा हुए थे।

२) भविष्यद्वाणी व्याख्या।

क) निर्गमन १५:२१ में, मरियम ने मूसा के गीत पर नृत्य किया।

ख) १ शमूएल १८:६, ७ में, दाऊद की मुलाकत गीतों और नृत्य से हुई जो उसकी आनेवाली सेवकाई के लिए भविष्यसूचक थे।

टिप्पणियाँ —

५. **हँसना** (देखें भजन १२६:२) इसे आनंद दिखाने और स्वतंत्र करने के एक तरीके के रूप में उपयोग किया जाता है।

६. **जयजयकार** (देखें १ शमूएल ४:५; एज्रा ३:११; भजन ५:११; ३२:११; ३५:११; ४७:१; सपन्याह ३:१४; जकर्याह ९:९) इसका उपयोग विजय के संकेत के रूप में, आनंद को स्वतंत्र करने और स्तुति-आराधना को ऊँचा उठाने और युद्ध के एक हथियार के रूप में किया जाता है।

७. ऊँची आवज (देखें २ इतिहास २०;१९; नहेम्याह ९:४; भजन ९८:४; लूका १७:१५; प्रेरितों १४:१०,११; प्रकाशितवाक्य ५:१२) इसका उपयोग एक चरम और उत्तेजनापूर्ण भावना की घोषणा करने के लिए किया जाता है।

८. **गंभीर ध्वनि और यात्रा** (देखें यहेजकेल ४६:९; भजन ९२:३)। यह एक समारोह में उपयोग किया जाता है और पवित्र, शांत, और गति या क्रिया में धीमा होता है।

९. **झंडा** (देखें निर्गमन १७:१५; भजन २०:५; ६०:४; यशायाह १३:२)।

क. परमेश्वर ''यहोवा-निस्सी'' (प्रभु मेरी जय का झंडा) के रूप में प्रगट हुआ है।

ख. प्रभु के झंडे को ''उठाने'' से जुडे कई सत्य हैं।

१) जब यीशु ''ऊपर उठा लिए जायेंगे'' तो वह सभी लोगों को अपनी ओर खींच लेंगे (यूहन्ना १२:३२)।

२) यह युद्ध के एक हथियार का प्रतिनिधित्व करता है (देखें यशायाह ३१:९; यिर्मयाह ४:६; ५०:२; ५१:१२, २७)।

३) यह आराधना और चंगाई का एक साधन है।

१०. गीत गाना।

क. आराधना में गाने के उपयोग के १२० से अधिक संदर्भ हैं।

१) लेकिन यह आराधना का एक ही रूप है।

२) हृदय की किसी भी दशा को गीत में व्यक्ति किया जा सकता है।

ख. नया गीत (देखें भजन ३३:३; ४०:३; ९६:१; ९८:१; १४४:९; यशायाह ४२:१०; प्रकाशितवाक्य ५:९;१४:३)। यह प्रभु का गीत है।

टिप्पणियाँ –

ग. उत्तरदायी गायन।

१) यह इस्राएल में गायन का मौलिक रूप था।

२) गीत संभावित रूप से ''सीखाने'' के लिए इस्तेमाल किए जाते थे।

३) पवित्रशास्त्र में सात प्रकार हैं।

क) दो दल/गायक मंडलियाँ (नहेम्याह १२:३१,४०,४२; एज्रा ३:११)। यह इस रूप का ''नियोजित'' उपयोग है।

ख) एक से दूसरे (१ शमूएल १८:७; २१:११; २९:५; यशायाह ६:३-४)।

(१) एक एकल का दूसरे एकल द्वारा उत्तर दिया जाता है।

(२) श्रेष्ठगीत इस प्रकार गया जा सकता है।

ग) एक से एक समूह (निर्गमन १५:२१)। साथ ही भजन ४४, ४७, ९९ के शीर्षक इस संभावना को इंगित करते है कि वे प्रधान बजानेवालों के प्रत्युत्तर में कोरह के पुत्रों द्वारा गाए गए थे।

घ) अगुवा मंडली से (भजन १०७; १३६; और १०६; ११८)। मंडली लिखित प्रतिक्रिया गा रही है।

ङ) गायक नाचने वालों से (निर्गमन १५:२१)। नृत्य के साथ गीत की व्याख्या करना।

च) गायक वाद्ययंत्रों के लिए (यशायाह ३८:२०)। वाद्ययंत्र गायकों के साथ या उनके जवाब में बजा सकते हैं।

छ) एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी (भजन १४५:४)। बच्चों को स्तुति और प्रभु के मार्गों के बारे में सिखाने का एक तरीका।

४) उत्तरदायी गीत बनाने के तीन तरीके हैं।

क) एक विषयवस्तु विकसित करने के लिए (श्रेष्ठगीत)।

ख) सभी या प्रत्येक कथन के भाग की प्रतिध्वनि के साथ।

ग) सवाल-जवाब के साथ। इसका अभ्यास करने की आवश्यकता है।

टिप्पणियाँ –

११. वाद्ययंत्र (निर्गमन १५:२०; भजन ७१:२२; १५०:३.६; १४४:९; प्रकाशितवाक्य ५:८)।

क. परमेश्वर के वचन को बेहतर ढंग से व्यक्त करने के लिए वाद्ययंत्रों को संगीत के सभी तत्वों का उपयोग करने की आवश्यकता है।

१) तालः यह वचन की ''भावना'' को जोड़ सकता है।

२) लयः यह प्रत्येक उपकरण की अनूठी ध्वनि का प्रभावी उपयोग है। यह मनोदश पर ज़ोर दे सकता है।

३) गति कीः यह भी मनोदशा पर ज़ोर दे सकती है। यह सिर्फ आवाज से बढ़कर है।

ख. स्तुति और आराधना में सभी तहर के वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता था।

१) डफ (यिर्मयाह ३१:४)।

२) तार वाले बाजे, बांसुरी और झांझ (भजन १५०:४,५)।

३) तुरहियाँ और नरसिंगे (भजन ९८:६)।

४) वीणा (भजन ३३:२)।

५) एक सम्पूर्ण स्वर समता (२ शमूएल ६:५)!

१२. हाथों का उठाना (पवित्रशास्त्र में १२ प्रकार हैं)।

क. विनती - नम्रता से कुछ मांगने की प्रार्थना। (देखें भजन २८:२; ८८:९, विलापगीत २:१९)।

ख. पश्चाताप - पछतावे की प्रार्थना (देखें विलापगीत ३:४०,४१; एज्रा ९:५,६; अय्यूब ११:१३)।

ग. स्तुति आर आशीष – (देखें भजन ६३:४; नहेम्याह ८:६; भजन १३४:२)।

घ. आराधना - (देखें भजन ४४:२०)।

ङ. परमेश्वर की प्यास और उन्हें खोजना - (देखें भजन १४३:६)।

च. प्रार्थना के प्रकार (देखें १ तीमुथियुस २:८, "पवित्र हाथों को उठाना"; १ राजाओं ८:२२,५४; २ इतिहास ६:१२,१९; भजन १४१:२)।

टिप्पणियाँ —

छ. युद्ध (देखें निर्गमन १७:११,१२)।

ज. अलौकिक सामर्थ्य (देखें निर्गमन ९:१५; १०:२१,२२; गिनती २०:११)।

झ. ध्यान (देखें भजन ११९:४८)।

ञ. दूसरों को आशीषित करने के लिए (देखें लूका २४:५०; लैव्यव्यवस्था ९:२२)।

ट. एक गंभीर घोषणा या शपथ लेना (देखें व्यवस्थाविवरण ३२:४०; १४:२२; यशायाह ६२:८; दानिय्येल १२:७)।

ठ. हृदय का चिन्ह् (देखें इब्रानियों १२:१२; नहेम्याह ८:६; अय्यूब ११:१३; विलापगीत ३:४१)।

१३. **ताली बजाना** (बाइबल मे सात प्रकारों का उल्लेख है)।

क. आनंद (देखें यशायाह ५५:१२; भजन ९८:८)।

ख. राज्यभिषेक (देखें २ राजा ११:१२)।

ग. विजय (देखें भजन ४७:१; यहेजकेल २५:६)।

घ. क्रोध (देखें गिनती २४:१०; यहेजकेल २१:१४; २१:१७)।

ङ. अपमान (देखें विलापगीत २:१५; अय्यूब २७:२३; ३४:३७; नहूम ३:१९; यहेजकेल २५:६, ७। इसका उपयोग आत्मिक युद्ध में किया जा सकता है।

च. दुःख (देखें यहेजकेल ६:११; २१:१४)।

छ. प्रतिज्ञा करना (देखें नीतिवचन ११:२१)।

टिप्पणियाँ —

VI. आराधना और छुटकारे के गवाह।

लेखक की टिप्पणी:

एक छोटी कलीसिया है जिसके दरवाजे पर दो चिन्ह् है। जैसे ही आप प्रवेश करते हैं आप इन शब्दों को देखते हैं, **आराधना के लिए प्रवेश।** जब आप कलीसिया से बाहर निकलते हैं जो एक और चिन्ह् है जो कहता है, **सेवा के लिए बाहर निकलें।** ये चिन्ह् साधारण हो सकते हैं लेकिन कलीसिया के उन दरवाजों पर बहुत अच्छा धर्मशास्त्र लिखा हुआ है - बाइबल आधारित आराधना वास्तव में परमेश्वर के आदर योग्य कार्य करती है।

क. गवाह का संदेश और उद्देश्य।

१. शायद कुछ लोगों ने आराधना के संबंध में सुसामाचार प्रचारकों के बारे में सोचा है- आराधक जो ऐसा जीवन जीते हैं जो अन्य आराधकों को पुनरूत्पादित करते हैं।

२. सिंहासन के चारों ओर के दृश्य में, पूरे इतिहास से हर जनजाति, भाषा और राष्ट्र के उपासक हैं। अंतर्निहित वास्तविकता यह है कि इन लोगों ने, विशेष समय पर पवित्र आत्मा के नेतृत्व में, प्रत्येक ने कुछ अन्य लोगों को अपने परमेश्वर की ओर मुड़ने के लिए प्रभावित किया। (दानिय्येल ६:१०-२८; प्रेरितों २:४७ और घटनाओं में आराधना और उत्सवपूर्ण जीवन की भूमिका पर विचार करें।)

क. एक शाक्तिशाली परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते का उत्सव मनाना (निर्गमन १५)।

ख. हमारे आधिकारिक स्थान का उत्सव मनाना; राजा और झुकने वाले सेवक (प्रकाशितवाक्य ५:८-१०)।

ग. अमानवीय देवताओं/मूर्तियों को गद्दी से हटाने का उत्सव मनाना (भजन १४९)।

टिप्पणियाँ —

ख. अंतिम घटनाः सिंहासन की ओर टकटकी।

१. आराधना शायद कुछ मानवीय कृत्यों में से एक है जिसके लिए कुल व्यक्ति - आत्मा, प्राण और देह की आवश्यकता होती है।

२. यह मानव जाति के उन कुछ कार्यों में से एक है जो समय की सीमा से परे हैं। स्वर्ग की हर झलक में, हम आत्मिक प्राणियों को आराधना के एक केंद्रिय उद्देश्य - सिंहासन पर राज्य करने वाले परमेश्वर पर केंद्रित देखते हैं।.

३. परमेश्वर के दर्शन से सर्वोच्च स्तुति की सहज प्रतिक्रिया होती है और आदर, प्रेम और आनंद की सबसे अधिक श्रद्धा और उत्सवपूर्ण मुद्राएँ होती हैं। पवित्रशास्त्र शुरू से अंत तक उनकी सर्वोच्च योग्यता की मान्यता की ओर लक्ष्य करने के लिए इतिहास के केंद्र को चित्रित करता है।

चर्चा का बिंदु

निम्नलिखित परिच्छेदों पर अध्ययन और चर्चा करें। समानताएं और अंतर खोजें। ध्यान दें कि जो सिंहासन पर बैठते हैं वह सारे ध्यान, प्रशंसा और प्रयास के केंद्र में हैं। (यहेजकेल १:४-२८; यशायाह ६:१-६; प्रकाशितवाक्य ४:८-११)।

VII. आराधना के बारे में व्यावहारिक विचार।

लेखक की टिप्पणीः

ऐसा कहा गया हैः ''हम अपनी योजना और तैयारी से परमेश्वर का अभिषेक और आशीष प्राप्त नहीं कर सकते, लेकिन योजना बनाने और तैयारी करने में विफलता के कारण हम इस तरह के अभिषेक और आशीषों को रोक सकते हैं।'' (गुमनाम)।

स्तुति और आराधना

टिप्पणियाँ —

क. उत्कृष्टता के लिए आयोजन। इस अंतिम खण्ड में आराधना के लिए आवश्यक समन्वय से संबंधित व्यावहारिक मामले प्रस्तुत किए गए हैं।

१. आराधकः आत्मिक तैयारी।

क. एक सही मायने में, आराधना का नेतृत्व नहीं किया जा सकता। संगीत और लोगों को व्यवस्थित किया जा सकता है और कुछ तकनीकों के प्रभाव के माध्यम से माहौल बनाया जा सकता है, लेकिन आराधना परमेश्वर के प्रकाशन के प्रति एक विश्वासी की व्यक्तिगत प्रतिक्रिया है।

ख. यदि विश्वासी ने व्यक्तिगत प्रतिबिंध के माध्यम से तैयारी नहीं की है, तो आराधना सबसे अधिक भावुक, या विशुद्ध रूप से बाहरी प्रदर्शन होगी।

२. आराधना सभाः आराधना पद्धति और उत्सव।

क. आराधना धार्मिक प्राथमिकताओं, शैलियों, संगीत विशेषज्ञता और संस्कृति से बढ़कर है जो इन्हें निर्धारित करती है। हालांकि आराधाना की सामूहिक अभिव्यक्ति को किसी न किसी तरह से समन्वित किया जाना चाहिए, भले ही वह न्यूनतम ही क्यों न हो। परमेश्वर के प्रति इस समन्वित दृष्टिकोण को आराधना पद्धति कहा जाता है।

ख. कुछ कलीसियाओं में आराधना पद्धति बहुत औपचारिक हो सकती है, जिसमें श्रद्धापूर्ण दृष्टिकोण पर ज़ोर दिया जाता है। अन्य उत्सव पर ज़ोर देने के साथ अधिक अनौपचारिक हो सकते हैं। शायद संतुलन सबसे अच्छा उद्देश्य है क्योंकि अलग-अलग उपासक अलग-अलग मनोदशाओं, जरूरतों और समझ को दर्शाते हैं।

३. शालीनता और व्यवस्थाः उत्सव सीमा के भीतर।

क. भले ही विश्वासियों की आराधनात्मक प्रतिक्रिया कि विशेषता औपचारिक या अनौपचारिक हो, बाइबल सिखाती है कि कुछ अभ्यास इसकी सीमाओं से बाहर हैं और अन्य इसकी सीमाओं के भीतर हैं। पवित्रशास्त्र को शासन करना चाहिए, न कि हमारी परंपरा, वरीयता, संस्कृति या शैली को।

ख. सभी मामलों में, सभा को अधिकृत व्यक्तियों द्वारा शालीनता और व्यवस्था में आयोजित किया जाना चाहिए ताकि आगंतुक बीच में परमेश्वर को पहचान सकें, और इसके द्वारा परिवर्तत हो सके (१ कुरिन्थियों १४:२६)। यह सीमाओं के भीतर उत्सव है।

४. आराधना, उनकी महिमा के अनुसार।

क. हमारी आराधना, हमारी शैली और रूपों की परवाह किए बिना, सीधे इस अनुपात में होगी कि हम परमेश्वर को कैसे महत्व देते हैं। हम उसके प्रति अपने दृष्टिकोण से कभी ऊपर नहीं उठते।

ख. यह पवित्रशास्त्र में बताए गए अनुसार मसीह में परमेश्वर पर गहन चिंतन करने के लिए है। वैध आराधना के लिए कोई अन्य स्त्रोत नहीं है, लेकिन वचन का समृद्ध भंडार है।

ख. आराधना अगुवों के लिए दो भागों वाला परिशिष्ट।

परिशिष्ट भाग I

समय के अनुसार और जैसा यह आपकी स्थिति पर लागू होता है निम्नलिखित रूपरेखा का उपयोग करें।

क. आराधना अगुवों और दलों के लिए बाइबल आधारित दिशानिर्देश।

१. संगीतकार धार्मिकता का जीवन प्रदर्शित करते हैं (देखें १ इतिहास १५:७; २ इतिहास ५:१२; २९:१५; नहेम्याह १२:३०)।

क. वे सफेद सन का वस्त्र पहने थे। यह सफेद सन का वस्त्र पवित्रता के जीवन का प्रतीक था।

ख. उन्हें पवित्र और शुद्ध किया गया था। संगीतकारों के लिए यह आज भी आवश्यक है।

१) स्वयं को प्रभु के प्रयोजनों के लिए अलग रखना।

२) अपने आप को संसार की वस्तुओं से शुद्ध और निष्कलंक रखना। नहेम्याह के समय की पुनः स्थापना में, संगीतकारों को सेवकाई की प्रतिज्ञा के द्वारा पवित्र किया गया था (देखें नहेम्याह १०:२८-३९)।

ग. उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था के लिए अपने आप को और अपने परिवार को संसार से अलग कर लिया।

१) वे अपने ''भाईयों'' के प्रति प्रतिबद्ध थे।

२) वे अपने अगुवों के प्रति प्रतिबद्ध थे।

३) वे परमेश्वर और उसके सब्त के विश्राम के प्रति प्रतिबद्ध थे।

टिप्पणियाँ —

४) वे कलीसिया की व्यावहारिक जरूरतों में मदद करने के लिए प्रतिबद्ध थे।

५) वे दशमांश और अन्य भेंटों के प्रति प्रतिबद्ध थे।

६) वे प्रतिबद्ध होने के लिए प्रतिबद्ध थे!

क) इसका अर्थ यह हो सकता है कि तब भी बजाने, अभ्यास करने या प्रार्थना सभा में जाना जब हमारा मन न हो।

ख) दल के सदस्यों के लिए यह अच्छा हो सकता है कि वे मंडली को ध्यान में रखते हुए और पासबानों/प्राचीनों द्वारा हाथ रखने के साथ सेवकाई में ''नियुक्त'' किए गए हों।

२. संगीतकारों को एक सीखनेवाले आत्मा को बनाए रखना चाहिए (देखें १ इतिहास १५:२२; २५:६-८; इफिसियों ४:११-१६; १ यूहन्ना २:२७)।

क. उनके पास एक नम्र आत्मा होना चाहिए जो सुधार और निर्देश में आनन्दित हो सके। परमेश्वर कुछ लोगों को संगीत की योग्यता देता है। हालांकि इस योग्यता को विकसित किया जाना चाहिए। इस प्रकार, संगीतकार को सीखने योग्य होना चाहिए।

ख. संगीताकरों को पाठ और अन्य कक्षाएं लेनी चाहिए जो उनकी प्रतिभा को सुधार और निखार सके।

३. संगीतकार के जीवन में विश्वासयोग्यता अनिवार्य है (देखें १ इतिहास ६:३२; १६:३७; २ इतिहास ७:६; ८:१४; नहेम्याह १२:४५)।

क. वाचा के संदूक से सामने निरंतर सेवकाई होती रही जब तक कि वह अपने अंतिम विश्राम स्थल (सुलैमान के मंदिर) में नहीं आ गया। यह लगभग तीस वर्ष का समय था।

ख. आराधना नियमित थी। हम अपने वाद्ययंत्रों को केवल तब ही नहीं बजा सकते जब हम बजाना चाहते हैं। यदि आवश्यक हो तो हमें अपने वाद्ययंत्रों को प्रतिदिन बजाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

टिप्पणियाँ —

४. एक संगीतकार को ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो एकता की इच्छा रखता हो (देखें २ इतिहास ५:१३; १ थिस्सलुनीकियों ३:१२; इफिसियों ४:३)।

क. जब दल प्रार्थना करता और एक साथ अभ्यास करता है तो उन्हें ''एक ध्वनि'' उत्पन्न करने में सक्षम होना चाहिए। संगीत में सामंजस्य जरूरी है। संगीत में सामंजस्य संगीतकारों के बीच सामंजस्य पर निर्भर करता है।

१) संगीत दल में ''प्रतियोगिता'' के लिए कोई स्थान नहीं है।

२) संगीतकार एक-दूसरे की गलतियों को प्रेम के रवैये में छिपा सकता है यदि उनके बीच एकता हो।

ख. एकता और शांति आत्मा में पाई जाती है।

१) एक दल के रूप में अभ्यास और प्रार्थना इस आत्मिक एकता के प्रति संवेदशीलता विकसित करने में मदद करती है।

२) यह कलीसिया की जरूरतों को पूरा करने और सेवा में सुचारू प्रवाह बनाए रखने के लिए आवश्यक आत्मिक समझ को भी विकसति करेगा।

५. निदेशकों या ''प्रधान संगीतकारों'' को नियुक्त किया था (देखें १ इतिहास १५:१६-२७; १६:५; २५:१-८; २ इतिहास ५:१२; नहेम्याह १२:४२)।

क. वास्तव में, सारे संगीतकारों को नियुक्त किया गया था। वे ''निर्वाचित'' नहीं थे।

ख. संगीकारों का एक क्रम (अधिकार का पदानुक्रम) और संगठन था।

१) इसने हर घंटे किसी न किसी को ''आराधना की ज़िम्मेदारी'' पर रहने की अनुमति दी।

२) ज़िम्मेदारी और अधिकार और अच्छादन का एक क्रम था।

३) आसाप के चौबीस (२४) पुत्र, हेमान और यदूतून २८८ से अधिक गायक और संगीतकार थे। अंततः ४००० ऐसे थे जिन्हें संगीत सेवकाई के इस प्रशासनिक आदेश में शामिल किया गया था (देखें १ इतिहास २३:५)।

४) उन्होंने यह देखने के लिए चिट्ठी डाली कि उन्हें कब सेवकाई के लिए ज़िम्मेदार होना है।

५) ऐसे भी समय थे जब वे सब एक साथ बजाते और सेवा करते थे।

टिप्पणियाँ –

ग. संगती की सेवकाई के बारे में चार प्रधान बजानेवालों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

१) आसापः जिसका अर्थ है ''एक व्यक्ति जो इकट्ठा करता है'' (देखें १ इतिहास ६:३९; १५:१७; २५:१,२; २ इतिहास २०:१४; २९:३०; ३५:१५)।

क) उनके नाम से हम देख सकते हैं कि एक आराधना दल के अगुवे के लिए दल को एकता में लाने में सक्षम होना महत्वपूर्ण है।

(१) उन्हें लोगों से सच्चा प्रेम करने की आवश्यकता है।

(२) उन्हें पासबानी के गुणों की आवश्यकता होगी।

ख) अपने उदाहरण से, वह मंडली को प्रभु की उपस्थिति में "एक साथ" इकट्ठा करने के लिए दल को चेला बनाएगा।

२) हेमानः का अर्थ है ''दाहिने हाथ वाला; विश्वासयोग्य'' (देखें १ इतिहास ६:३३; २५:५; २ इतिहास ३५:१५; भजन ८८)। इस प्रकार, आराधना के अगुवों को विश्वासयोग्य होना चाहिए।

क) वह दल में दूसरों को चेला बनाने में सक्षम होना चाहिए।

ख) ऐसी ''सार्वजनिक रूप से दिखाई देने वाली'' सेवकाई के लिए विश्वासयोग्यता आवश्यक है।

३) एताव-यदूतूनः का अर्थ है ''सामर्थ्य; निरंतरता; वे स्तुति करें'' (देखें १ इतिहास ६:४४; २५:१-३,६; २ इतिहास ५:१२; नहेम्याह ११:१७; भजन ३९; ६२; ७७)। दल और मंडली की स्तुति में लगातार अगुवाई करने में सक्षम होने के लिए आराधना के अगुवे को ऊर्जावान और दृढ़ होना चाहिए।

४) कनन्याहः का अर्थ है ''यहोवा ने स्थापित किया'' (देखें १ इतिहास १५:२२, २७)। वास्तव में, संगीत सेवकाई को प्रभु के हाथ से बनाया और संचालित किया जाना चाहिए।

टिप्पणियाँ –

६. संगीतकार अन्य व्यावहारिक सेवकाईयों में शामिल थे (देखें १ इतिहास ९:२६-३३; २५:८-३१; २६:२९; नहेम्याह ११:२२)।

क. वे ''रखरखाव विभाग'' के प्रभारी थे।

ख. उन्होंने वित्त संभाला।

ग. उन्होंने द्वारा खोलें।

घ. वे भवन के पात्रों और फर्नीचर के लिए ज़िम्मेदार थे।

ङ. उनमें से कुछ ने लोगों की कानूनी और सरकारी जरूरतों के लिए मदद की।

७. वहाँ पुरूष और महिला दोनों संगीतकार थे (देखें एज्रा २:६५; नहेम्याह १२:४३)।

परिशिष्ट भाग II

निम्नलिखित खण्ड मुख्य रूप से कलीसियाओं और संस्कृति के लिए है जिसमें एक दल को प्रथमिकता दी जाती है। यह उन लोगों के लिए मददगार होगा जो इन कलीसियाओं में आराधना की सभाओं का आयोजन करते हैं।

ख. आराधना दल बनाने के लिए व्यावहारिक सुझावः

१. दल को उपकरणों के उद्देश्य को समझना चाहिए।

क. संदूक (प्रभु) के सामने सेवा करने के लिए। (देखें १ इतिहास १६:४, ६, ३७)

ख. प्रभु की ''स्तुति'' करने के लिए (देखें १ इतिहास २३:५; भजन ३३:२; ७१:२२; ९२:१३; ९८:५, ६; १४९:३; १५०:३-५)।

ग. गायकों का साथ देने के लिए (देखें १ इतिहास १५:१६)।

घ. सभा को बुलाने और उसका नेतृत्व करने के लिए (देखें गिनती १०:१.१०; भजन ८१:३; ९२:१-३)।

ङ. छुटकारे और मार्गदर्शन के लिए (देखें २ राजाओं ३:१५; १ शमूएल १०:५, ६)।

च. भविष्यद्वाणी के लिए (देखें १ इतिहास २५:१-३; भजन ४९:४)।

टिप्पणियाँ —

छ. युद्ध का एक हथियार (देखें गिनती १०:२-१०; भजन १४४:१)।

ज. एक मिशनरी का उपकरण (देखें भजन ५७:७-९)।

२. आपको एक ''प्रधान संगीतार'' की आवश्यकता होगी।

क. यह महत्वपूर्ण है (हालांकि आवश्यक नहीं) कि वे स्वयं संगीतकार हों।

ख. उन्हें अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने और उन क्षेत्रों पर अधिकार देने की ज़रूरत है।

ग. मुख्य संगीतकार में निम्नलिखित गुण होने चाहिएः

१) आत्मिक (वरदान और बुलाहट)। (देखें १ तीमुथियुस ३:१-७; तीतुस १:५-९)।

क) वह परमेश्वर के वचन को सही ढंग से संभालने में सक्षम होना चाहिए।

ख) वह एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो अपने जीवन में प्रार्थना का अनुशासन और विश्वासयोग्यता को स्थापित करे।

ग) यह स्पष्ट होना चाहिए कि उसका अधिकार परमेश्वर की ओर से है।

घ) वह सिद्ध सत्यनिष्ठा का व्यक्ति होना चाहिए।

ङ) उसमें लोगों के लिए वास्तविक प्रेम (परमेश्वर का प्रेम) होना चाहिए।

च) उसमें लोगों को एकता और सद्भाव में लाने की क्षमता होनी चाहिए।

२) गुण (प्रतिभा और क्षमताएं जिन्हें विकसित किया जा सकता है)।

क) संगठनात्मक और नेतृत्व कौशल। उसके पास अच्छी तरह से संवाद करने की क्षमता होनी चाहिए ताकि वह परिभाषित कर सके कि आराधना दल के प्रत्येक सदस्य से क्या अपेक्षा की जाती है।

ख) उसके पास संगीत कौशल और उसके सिद्धांत में सीखने और बढ़ने की क्षमता होनी चाहिए।

टिप्पणियाँ —

३. प्रार्थना करें, चुनें और संगीताकरों को न्युक्त या निर्धारित करें।

क. प्रार्थना करें और परमेश्वर से उन संगीतकारों को मांगे जिनकी आपको जरूरत है। प्रार्थना में मंडली को शामिल करें।

ख. युवा और अकुशल संगीतकारों को प्रोत्साहित (और जब संभव हो तो प्रदान करें)। केवल रिक्त स्थानों को भरने के लिए अकुशल संगीतकारों (यदि सभंव हो तो) का उपयोग न करें।

ग. संगतीकारों के शिष्यत्व को बढ़ाव दें।

घ. प्रत्येक के संगीत कौशल के विकास को बढ़ावा दें।

ङ. यंत्रों का अभिषेक करें।

१) कलीसिया से धन या पुराने यंत्रों को दान करने के लिए कहें।

२) उपकारणों की खरीद और मरम्मत के लिए कलीसिया के वित्त को अलग रखें।

च. अभ्यास का एक नियमित और व्यवस्थित समय विकसित करें।

१) व्यक्तिगत और सामूहिक प्रार्थना शामिल करें।

२) एक दल के रूप में अभ्यास करें।

३) नए गीत सीखें।

४) संगीत सिद्धांत का अध्ययन करें और प्रत्येक संगीतकार की शैली और क्षमताओं को व्यापक बनाने का प्रयास करें।

५) प्रत्येक सदस्य के पास संगीत टिप्पणियों का अपना फोल्डर होना चाहिए।

६) एक दल के रूप में लक्ष्य निर्धारित करें।

छ. आराधना दल के सदस्यों को अपने वाद्ययंत्रों को सुधारने, प्रार्थना करने और आराधना के लिए ''तैयार'' होने के लिए सभाओं से पहले आना चाहिए।

टिप्पणियाँ –

४. आराधना के अगुवों के लिए विचार और सुझाव।

क. यह बहुत कठिन काम है! आराधना के अगुवे को समस्त मंडली को परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर संवाद करने लिए उसकी उपस्थिति में ले जाने की (धकेलने की नहीं) आवश्यकता होगी।

१) मंडली अक्सर थकी हुई, बीमार, निराश, विद्रोही, आहत करने वाली, या एक दूसरे के साथ तालमेल नहीं रखने वाली होगी।

२) आराधना का अगुवा अपनी भावनात्मक स्थिति के अनुसार सभा का नेतृत्व नहीं कर सकता। प्रभु मंडली की सेवा करना चाहता है, आराधना के अगुवे को अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को अलग रखना चाहिए और मंडली की आत्मिक स्थिति के साथ-साथ पवित्र आत्मा की दिशा के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। आराधना का अगुवा अन्य संगीतकारों के साथ तालमेल बिठाकर, अनुग्रह का माध्यम बन सकता है।

ख. आराधना अगुवे के तीन बुनियादी कार्य होते हैं, जिनकी कुछ निश्चित आवश्यकताएँ होती हैं।

१) मंडली को प्रभु की उपस्थिति में ले जाना।

क) आराधना के अगुवे के लिए परमेश्वर की आराधना करना ''जीवन शैली'' होनी चाहिए।

ख) उसे परमेश्वर का गहरा ''ज्ञान'' होना चाहिए।

ग) मंडली की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसमें आत्मा की दिशा के प्रति संवेदनशीलता होनी चाहिए।

घ) उसे एक सेवक होना चाहिए।

ङ) उसमें परमेश्वर की भेड़ों के लिए सच्चा ईश्वरीय प्रेम होना चाहिए।

च) उसे आलोचनात्मक भावना रखने से बचना चाहिए। जिन लोगों की आप लगातार आलोचना करते हैं, उनकी आराधना में अगुवाई करना बहुत कठिन है।

छ) उसे अपने जीवन में समय का पाबंध और व्यवस्थित होना चाहिए।

टिप्पणियाँ –

२) संगीतकारों की अगुवाई और कवर करना।

क) संगीतकारों के प्रति उसका प्रेम वास्तविक और परमेश्वर की ओर से होना चाहिए।

ख) आराधना के विभिन्न रूपों (विजय उत्सव, नृत्य, भविष्यद्वाणी, नया गीत इत्यादि।) में उसके पास कौशल होना चाहिए।

ग) उसके पास संगीत की मूल बातों को जानने का कौशल होना चाहिए।

(१) पिच।

(२) रेंज।

(३) अन्य संगीत सिद्धांत।

३) बाकि की सभा में परमेश्वर जो करने जा रहे हैं उसके लिए मंडली का नेतृत्व और तैयारी करना।

क) उसे कलीसिया के अगुवों के प्रति अधीन और सद्भवा में होना चाहिए।

ख) उसे आत्मा के प्रवाह और उस दिशा के प्रति संवेदनशील होना चाहिए जिसमें प्रभु कलीसिया को ले जाना चाहते है।

ग. आराधना के लिए तैयारी।

१) व्यक्तिगत शुद्धिकरण (देखें १ इतिहास १५:१४; २ इतिहास २९:१४, १५; नहेम्याह १२:३०; गलातियों ५:२५; १ कुरिन्थियों ६:११)।

क) इसके लिए व्यक्तिगत प्रयास की आवश्यकता होती है।

ख) इसे दैनिक आधार पर किया जाना चाहिए।

ग) आराधना का अगुवा शुद्ध हृदय के बिना सारा अभिषेक खो देगा।

टिप्पणियाँ –

२) प्रभु की बाट जोहना (देखें १ इतिहास ६:३२; २ इतिहास ७:६; ३५:१५, १६; रोमियों १२:७)।

क) प्रत्येक सेवा के लिए प्रभु के पास एक योजना है।

ख) वह अपनी योजना को हमारे साथ साझा करना चाहते हैं।

ग) वह इसे बदलने का अधिकार सुरक्षित रखता है! यह एक उपदेशक के समान है जो एक उपदेश तैयार करता है। जब वह तैयारी कर रहा होते हैं तो वह परमेश्वर का मार्गदर्शन चाहते हैं। फिर भी, वह परिवर्तन करने के लिए तैयार रहे हैं क्योंकि पवित्र आत्मा सेवा के दौरान उनका मार्गदर्शन करते हैं।

३) आराधना के अगुवे के पास उन गीतों की एक सूची होनी चाहिए जिनका इस्तेमाल करने की वह ''योजना'' बना रहा है।

क) गीतों की इस सूची में विषयवस्तु, लय आदि के संबंध में प्रवाह होना चाहिए।

ख) दल के साथ पर्याप्त अभ्यास करने की आवश्यकता है। दल एक शैली को विकसित करेगा और एक साथ प्रवाहित होना शुरू करेगा। यह अभ्यास सत्र के दौरान होना चाहिए।

घ. आराधना की अगुवाई करने के लिए विभिन्न व्यावहारिक बिंदु।

१) जितना संभव हो सके, आराधना के अगुवे को सभी संगीतकारों के साथ शांति में रहना चाहिए!

क) यदि सुधार की आवश्यकता है, तो इसे निजी तौर पर करें।

ख) जितना संभव हो उनके साथ अभ्यास करें।

ग) संगीतकारों के साथ संवाद करने के लिए हाथ के संकेतों का एक सरल सेट विकसित करें।

घ) ऐसे गीतों का इस्तेमाल न करें जिन्हें दल गा या बजा नहीं सकता।

टिप्पणियाँ –

२) आराधना के दौरान कम से कम बात करनी चाहिए।

क) बात करने से ''आत्मा का प्रवाह'' टूट सकता है।

ख) मंडली को कभी भी फटकारें या सुधारें नहीं। यह पासबान का काम है। यदि आवश्यक है तो, सभा के बाद अपनी चिंताओं को उनके साथ साझा करें।

ग) लोगों का परिचय यीशु को ऊँचा उठाने पर केंद्रित होना चाहिए न कि उस व्यक्ति को जिसका परिचय दिया जा रहा है।

३) गीतों को ध्यान से और कुशलता से चुनें।

क) एक विषय विकसित करें।

ख) बदलाव करने और प्रवाह बनाने के लिए कुंजियों, लय और विषयों के उपयोग में कुशल बनें।

ग) आपकी योजना के तहत उपयोग किए जाने वाले गीतों से ''अधिक'' गीत तैयार करें।

घ) चीजों को बदलने के लिए प्रभु के प्रति खुले और उपलब्ध रहें। ऐसा गीत गाने के लिए पर्याप्त लचीले रहें जिसे गाने की आपने योजना नहीं बनाई थी।

ङ) सभा को कभी अभ्यास के समय के रूप में उपयोग न करें।

च) नए गीत सिखाएं जो उस विशेष समय में प्रभु कलीसिया से कह रहे हैं, उसके अनुरूप हों।

टिप्पणियाँ –

४) आपको अपने नेतृत्व में मजबूत होने की जरूरत है।

क) आप गुवे हैं (मडंली या आराधना दल नहीं)।

ख) पहली टिप्पणी सबसे महत्वपूर्ण है। आपको इसे एक स्पष्ट तरीके से शुरू करने की आवश्यकता है।

ग) अधिकांश समय आपको राग गाना चाहिए।

घ) आराम से रहने की कोशिश करें। यदि यह स्पष्ट है कि आप नहीं हैं, तो मंडली पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

ङ) लोगों की अगुवाई प्रभु की ओर करें, अपनी ओर नहीं।

५) आत्मा के प्रति संवेदनशील रहें।

क) सेवकाई के अन्य क्षेत्रों में जाने से पहले स्तुति और धन्यवाद का रवैया स्थापित करें।

ख) एक गीत को तब तक गाओ जब तक आप अपनी आत्मा में महसूस नहीं करते कि लोगों ने अपनी आत्मा में इसका संदेश प्राप्त किया है और इसे परमेश्वर के लिए गा रहे हैं।

ग) जानें कि ''कब'' भविष्यद्वाणी के समय में प्रवेश करना है। आपको इसके और अन्य वरदानों के लिए बाइबल का आधार पता होना चाहिए।

घ) मौन से न डरें।

ङ) किसी भी भविष्यसूचक कथन का जवाब देने के लिए मंडली का नेतृत्व करें।

(१) पासबान के अभिषेक पर भरोसा करें। उन्हें तय करने दें कि क्या वरदान ''क्रम'' में हैं।

(२) पासबान के साथ ''मौन संवाद'' का साधन स्थापित करें।

च) जानें कि कब रूकना है। समय सीमा के अधीन रहें।

छ) बहुत अधिक ''शिखर'' बनाने की कोशिश न करें।

टिप्पणियाँ –

ज) सेवकाई के एक विशिष्ट ''चरमबिंदु'' के बाद कब आगे बढ़ना है, इसके प्रति संवेदनशील रहें।

६) अन्य विचार और सुझाव।

क) आराधना के प्रकार के संबंध में ''स्वभाव और मार्ग'' से अवगत रहें।

(१) ताली बजाना व्यर्थ हो सकता है यदि इसका उपयोग हर समय किया जाए।

(२) सावधान रहें कि एक ऐसे प्रतिरूप मे न पड़े जहाँ एक ही गाने हमेशा एक दूसरे का अनुसरण करते हैं।

ख) मंडली को कभी-कभी खड़े होने के लिए प्रोत्साहित करें (विशेषकर शुरूआत में)।

ग) बैठने, प्रकाश, ध्वनि प्रणली आदि के संबंध में डीकन की ज़िम्मेदारियों का आराधना के प्रवाह पर बहुत प्रभाव पड़ सकता है।

(१) इन लोगों के साथ संवाद में खुले रहें।

(२) अपनी आवश्यकताओं और चिंताओं को उनके साथ साझा करें।

घ) आराधना को स्वयं परमेश्वर पर केंद्रित करें। उसके लिए गाने में लोगों का नेतृत्व करें (एक दूसरे के लिए या खुद के लिए नहीं)।

ङ) आराधना के एक दृष्टिकोण को बढ़ावा दें जो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं और उनकी सेवा करना चाहता है। उस दृष्टिकोण से बचे जो आराधना करनेवाले के लाभों पर केंद्रित है (लोग कभी-कभी इसलिये आराधना करते हैं क्योंकि वे ''अच्छा'' या ''आत्मिक'' महसूस करना चाहते हैं)।

(१) याद रखें, हम परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं। यह उन्हीं के लिए, उन्हीं की ओर से, उन्हीं के माध्यम से, और उन्हीं के द्वारा है। वही केंद्र है।

(२) हम, बेशक आराधना के समय परमेश्वर को प्राप्त करेंगे। हम आशीषित होगें। हालांकि, यह आराधना का लक्ष्य नहीं है। यह एक परिणाम है।

स्तुति और आराधना

टिप्पणियाँ —

स्तुति और आराधना: अंतिम टिप्पणियां

[1]वेस्ट, रसेल डब्ल्यू. "आराधना पर व्यक्तिगत विचार।" वर्जीनिया बीच, वर्जीनिया १९९४। टेरी काइल को श्रेय देने वाले उन खंडों को छोड़कर यह पाठ्यक्रम, जीवन व्यतीत करने, आराधना और गवाह में उत्कृष्टता पर व्यक्तिगत विचारों से लिया गया है। इसे अनुमति द्वारा MOTMOT (द्वितीय संस्करण) में उपयोग के लिए सहयोग दिया गया है।

[1]काइल, टेरी, MOTMOT, पहला संस्करण। ग्वाटेमाला में प्रशिक्षण संस्थान के लिए विकसित पाठ्यक्रम से अनुकूलित, १९९१। खण्ड II.ख, "फॉर्म" और III। "आराधना के अगुवों और दलों के लिए परिशिष्ट" को पुनः शीर्षक दिया गया। इसका उपयोग अनुमति द्वारा किया गया है।

[2]टेनी, मेरिल सी। जोंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी। ग्रैंड रैपिड्स: ज़ोंडरवन। प्रविष्टियाँ: अश्तोरेत, बाल, दागोन, मूर्तिपूजा, मोलेक।

[3]एलवेल, वाल्टर ए. इवेंजेलिकल डिक्शनरी ऑफ थियोलॉजी, ग्रैंड रैपिड्स: बेकर बुक हाउस से ली गयी विशेषताएँ, पृष्ठ ४५१-४५८।

संदर्भ की सूची

हैरेल, विलियम। कंसर्निंग वर्शिप। नॉरफ़ॉक, वी.ए.: इमैनुएल प्रेस्बिटेरियन चर्च। १९८६।

हेसलेग्रेव, डेविड जे. प्लांटिंग चर्चेस क्रॉस-कल्चरली। ग्रैंड रैपिड्स: बेकर बुक हाउस। १९८० पृष्ठ ३१४-३२२।

कैंड्रिक, ग्राहम। वर्शिप। सफ़ोल्क, इंग्लैंड: किंग्सवे पब्लिशिंग। १९८४।